CS (Main) Exam:2015

MAITHILI

PAPER—II

(LITERATURE)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

There are EIGHT questions divided in two Sections.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI (Devanagari script).

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION—A

1. काव्य-वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 10×5=50

(a) तातल सैकत वारि विन्दु सम
सुत मित रमनि समाजे,
तोहे बिसारि मन ताहे समापलुँ
अब मझु हब कोन काजे॥
माधव हम परिनाम निरासा।

(b) हा रघुनाथ आनथ जकाँ, दशकण्ठ-पुरी हम आइलि छी।
सिंहक त्रास महावनमे हरिणीक समान डराइलि छी॥
चन्द्र-चकोरि अहँक सदा, हम शोक समुद्र समाइलि छी।
देवर-दोष कहू हम की, अपना अपराधसँ काइलि छी॥

(c) कतो एक दिवस जखन बिति गेल। हरि पुनु हथगर गोड़गर मेल।
से कोन ठाम कतय नहि जाथि। कय बेरि अंगनहुँ सौं बहराथि॥
द्वार उपर सौं धरि धरि आनी। हरखथि हँसथि जसोमति रानी।
कय बेरि आगि हाथ सौं छीनु। कय बेरि पकलाह तकला बीनु॥

(d) विधवा हमरे सन हजारक हजार
बहौने जा रहलि अछि नोरक धार
ओहिमे ई मुलुक डुबि बरु जाय
ओहिमे लोक भसिया बरु जाय
अगड़ाही लगौ बरु बज्र खसौ
एहेन जाति पर बरु धसना धसौ
भूकम्प हौक बरु फटौ धरती
माँ मिथिला रहिये क' की करती!

(e) देखु, क्षितिजसँ-इन्दु कलाक समान
मत्स्यराज—अन्तःपुरसँ बहराए
के थिक सुन्दरि सुर-रमणी-अनुरूप
जाइत राजपथहिँ एकसरि सकुमारि
मत्त-चकोर-नयनि, निज-पद-नख-चन्द्र-
बद्ध-दृष्टि, गज-गामिनि! किअ मुखकञ्ज
अछि एहन विवर्ण, किअ विद्रुम-कान्ति
अधर स्फुरित सङ्कुचित कुटिल भ्रूभंग, छूटइछ अन्तर्ज्वाल-पूर्ण निःश्वास।

2. *(a)* 'मिथिला भाषा रामायण'क 'सुन्दरकाण्ड'क वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। 20

(b) 'कीचक वध' महाकाव्यक महाकाव्यत्व प्रमाणित करू। 15

(c) "मनबोध रचित 'कृष्णजन्म' मैथिली साहित्य मध्य एकटा क्रान्तिकारी डेग प्रमाणित भेल।" एहि कथनकेँ पुष्ट करू। 15

3. *(a)* " 'चित्रा'मे सर्वहरा वर्गक मर्मस्पर्शी वेदनाक स्वर मुखरित भेल अछि।" एहि कथनक विवेचना करू। 20

(b) 'समकालीन मैथिली कविता'क आधार पर रामकृष्ण झा 'किसुन'क काव्य-सौष्ठवसँ परिचय कराउ। 15

(c) "लालदास रचित 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण' मध्य सीताक चरित्रक प्रधानता अछि"—विवेचना करू। 15

4. *(a)* "गोविन्ददासक काव्यमे अर्थगाम्भीर्य एवं भक्तिभावनाजन्य तन्मयता दृष्टिगोचर होइत अछि।" एहि उक्तिक आलोकमे गोविन्ददासक काव्य-वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। 20

(b) "विद्यापतिक काव्यक उत्कर्ष हिनक पदावलीमे देखल जाइछ।" एहि कथनकेँ पल्लवित करू। 15

(c) 'दत्तवती' महाकाव्यक पठित अंशक आधार पर 'सुमन' जीक पाण्डित्य-प्रकर्षसँ परिचय कराउ। 15

SECTION—B

5. निम्नलिखित कथ्यक अभिव्यंजनागत वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत सन्दर्भ-सहित व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 10×5=50

(a) "असलमे धरती जोतनिहारक थिक। हरबाहक थिक जे धरतीक असल बेटा थिक। जे अपन पसेनासँ धरती-माताकेँ पूजै अछि। कै दिन देखलहक अछि मालिककेँ अपन पसेनासँ धरती-माताक पूजा करैत? देखहक सरकारी कानून त' जरूर सोचि विचारि क' बनै छैक ने। बटिदारक नामे खाता कि सिकमी-खाता खोलबाक कानून जरूर कोनो इनसाफसँ बनल हेतैक। हम सभ निपढ़ छी तेँ भने नै बुझियै, मगर ई सोचबाक चाही जे सभ कानूनक पाछाँ कोनो निसाफ जरूर रहैत छैक।"

(b) "नै, एना बुझलासँ लोकक काज नै चलि सकै छै। जेँ आइ सभ नवयुवकक लक्ष्य नोकरियेटा भऽ गेलैए तेँ सभतरि निराशाक वातावरण बनि गेल छै। चाही ई जे नोकरीयोकेँ एक साधन बूझल जाय। जेना ई संसार अनन्त अछि तहिना साधनो असीमित छैक। मोनकेँ एके खुट्टासँ बन्हने रहब मनुक्खक मर्यादाकेँ आ ओकर सामर्थ्यकेँ अपमान करब थिक।"

(c) "सरिपहुँ ..... बागमती, कमला, बलान, गण्डक आ खास क' क' कोसी तँ अपराजिता अछि ने। ककरहु सामर्थ्य नहि जे एकरा पराजित क' सकय। सरकार आर्औत ..... चलि जायत ..... मिनिस्टरी बनत आ टूटत—मुदा ई कोसी ..... ई बागमती ..... ई कमला आ बलान ..... अपन एही प्रलयंकारी गतिमे गामकेँ भसिअबैत, हरिअर-हरिअर खेतकेँ उज्जर करैत, माल-जालकेँ नाश करैत, घर द्वारक सत्यानाश करैत बहैत रहत आ बहैत रहत।"

(d) ''केहन मुखश्री! केहन सरल निश्छल आँखि! हृदयक गूढतम भाग एहि आँखिक द्वारा देखि सकैत छी। मुदा ई सरलता, ई निश्छलता रहत कतेक दिन? एखन यौवनमे प्रवेश मात्र भ' रहल अछि। नव आशा अछि नव विश्वास। संसारक अनुभव बाँकी अछि तैं। आ, एकर बाद? नीक बरक अभाव, अतिशय मूल्य ..... कत' ई कान्ति, ई स्वर्गीय लावण्य। पीयर देह, आँखि धसल, मलिन मुखमण्डल .....।''

(e) पताल अइसन दुःप्रवेश· स्त्रीक चरित्र अइसन्दर्क्ष· कालिन्दीक कल्लोल अइसन मांसल· काजरक पर्व्वत अइसन निविल· पाप/क सहोदर अइसन· शरीर· आतङ्कक नगर अइसन भयानक· कुमन्त्र अइसन निष्फल· अज्ञान अइसन सम्मोहक· मन अइसन सर्व्वतोगामी· अहङ्कार। अइसन उन्नत· परद्रोह अइसन अभव्य· पाप अइसन मलिन· एवम्विध अति व्यापक· दुःसञ्चर· दृष्टिबन्धक· भयानक· गम्भीर· शूचीभेद्य· अन्धकार दे/षु·

6. (a) सामाजिक जीवन पर आधारित 'आम खयबाक मुँह' सरसताक दृष्टिएँ एक सफल कथा थिक—स्पष्ट करू। 20

(b) ''जिबैत रहब पहिने जरूरी छैक संसारमे। तखन लोक लाज। नीक बेजाय।'' एहि उक्तिक आलोकमे 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यासक मूल्यांकन करू। 15

(c) ''खट्टर कका स्वच्छन्द चिन्तन ओ बुद्धि विलासक प्रतीक थिकाह।'' एहि कथनकेँ पल्लवित करू। 15

7. (a) ''कवि राजकमलकेँ लोक बिसरि जाइत, मुदा कथाकार राजकमल मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे अमर रहताह।'' एहि कथन पर विचार करू। 20

(b) ''मनमोहन झाक मैथिली कथाक शब्द-शब्दमे नवीनता ओ प्रयोगधर्मिताक झलक भेटैत अछि, जेहने भाव-वस्तुमे, तेहने अभिव्यक्ति शैलीमे।'' एहि उक्तिक समीक्षा करू। 15

(c) 'वर्णरत्नाकर' मैथिलीक प्राचीनतम गद्य ग्रन्थ थिक—एकर ऐतिहासिक महत्त्वक विश्लेषण करू। 15

8. (a) '' 'लोरिक विजय' सामाजिक संघर्षक अभिलेख थिक।'' एहि उक्तिक सार्थकता देखाउ। 20

(b) नाट्यतत्त्वक निकष पर 'भफाइत चाहक जिनगी' नाटकक मूल्यांकन करू। 15

(c) ''करुण रसक स्रोत प्रवाहित करबामे कथाकार मनमोहन झाक अविस्मरणीय अवदान अछि''—प्रमाणित करू। 15

* * *